Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.3982, Volume 08, No. 01, January, 2018, pp. 540-541

vk/kfud f'k{kk i.kkyh e f'k{kk e pukfr;k

Mk- e/k [k.Myoky*

वर्तमान समय में शिक्षा की नवीन दिशाओं पर दृष्टिपात् करने में यह आभास होता है कि आधुनिकीकरण की इस स्थिति में शाला शिक्षा व्यवस्था में कुछ परिवर्तन हुए है संख्या में वृद्धि हुई है और यह स्वीकार किया गया है कि नई सामाजिक आर्थिक परिस्थिति के अनुकूल शिक्षा प्रणाली अपनाई जानी चाहिए यह सर्वमान्य है कि शालाओं में उपयुक्त शिक्षा व्यवस्था के लिए सुयोग्य शिक्षकों की आवश्यकता पडेगी। क्योंकि परम्परा सकींर्णता और वेडियों में बंधी शिक्षा अध्यापक को नई शिक्षा देने के लिए नवीन विचारो से ओत–प्रोत शिक्षक चाहिए और इनकों तैयार करने का भार शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों पर है।

इस दृष्टि से नया दृष्टिकोंण और नई विचारधारा शिक्षक प्रशिक्षण के सम्बन्ध में पनप रहीं है नवीन चिन्तन और परिवर्तन शिक्षक प्रशिक्षण क्षेत्र में दिखाई दे रहे है इसके अनेक कारण होते हुए भी सबसे बडा कारण यह है कि विद्यार्थियो की अधिक संख्या वाली कक्षाऐं शालाओं में बढ़ती जा रही है। आदान–प्रदान की नवीन पद्धितियों यथा रेडियो, टेलीविजन समाचार पत्र आदि की संख्या में वृद्धि होती जा रही है और इनका प्रचलन शालाओं में भी बढ़ता जा रहा है। इनका प्रभाव शिक्षा व्यवस्था पर भी पड़ रहा है।

शिक्षक और शिक्षार्थी के सम्बन्धों के बारे में नया दृष्टिकोण उपस्थित हुआ है भारतीय परम्परा के अनुसार गुरू शिष्य का सम्बन्ध आत्मीयता और निकटता का रहा है लेकि आज की परिस्थितियों में प्राचीन परम्परागत गुरू शिष्य का प्रत्यक्ष और निकट सम्बन्ध संभव नहीं है क्योंकि बड़ी–बड़ी कक्षाओं में व्यक्तिगत सम्पर्क की कमी है इन बड़ी कक्षाओं में इस प्रकार की शिक्षण विधियां अपनाई जाती है जिनमें विद्यार्थी परोक्ष एवं अवैयक्तिक सम्बन्ध ही हो पाते है इस परिस्थिति में शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम पर भी प्रभाव डाला है उन शिक्षण–विधियों की आवश्यकता अनुभव होने लगी है जिनके द्वारा बड़ी कक्षाओं में आधुनिक यंत्र और संचार संसाधनों से शिक्षण दिया जा सके।

वर्तमान समय में अध्यापक शिक्षा में अनेंकानेक समस्याऐं विद्यामान है तथा नित्य नवीन चुनौतियां उभर रही है इसके पीछे अनेकानेक सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक कारण निहित है प्रत्येक स्तर पर अध्यापक शिक्षा का मूलभूत लक्ष्य उत्तम अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की तैयारी को सुनिशिचित करना है जिसमें गुणात्मक स्तर उच्च हो तथा जो समाज एवं समुदाय के लिए दिशा निर्देशन कर्ता के रूप में कार्य करने में सर्वथा सक्षम हो। समस्याएं ही चुनौतियों के उत्पन्न होने के लिए आधारशिला का कार्य करती है। आधुनिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में पर्याप्त तन्मयता एवं लचीलापन होना जरूरी है। अध्यापन उद्यम के क्षेत्र में अभिप्रेरणा तथा बाहरी प्रोत्साहन की कमी को देखते हुए मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इस कार्यक्रम के आयोजन को संतृप्त करने के लिए प्रयास अपेक्षित है।

अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में भारतीय आदर्श, मूल्य, परम्परा, संस्कृति एवं संस्कार आदि के स्थान को निर्दिष्ट करते हुए आधुनिक विकेन्द्रीकरण, भूमण्डलीकरण, आर्थिक उदारीकरण तथा स्वसंस्था धनार्जन के संदर्भ में सामान्य स्थीकरण चुनौतियां है। पर्यावरण प्रदूषण, जनसंख्या विस्फोट, राष्ट्रीय अस्मिता, संवैधानिक दायित्व, अधिकार एवं कर्तव्य नेतृत्व संबंधी कुशलता आदि के संदर्भ में अध्यापक शिक्षा की भूमिका निर्धारण संमबन्धी चुनौतियां है।

* ikpk;k] [k.Myoky f'k{kk ikFkfed egkfo|ky;] Hkjriqj] jkt LFkkuA

vefjdh f'k{kk'kkL=h fdyifVd d vu|lkj:– प्रशिक्षण तो सर्कस में काम करने वाले व्यक्तियों और पशू–पक्षियों को दिया जाता है, शिक्षकों को तो शिक्षा दी जाती है।

प्रशिक्षण केवल शारीरिक क्रियाओं तक सीमित नहीं होता है, जबकि शिक्षा में मानसिक एवं शारीरिक दोनों प्रकार की क्रियाएं सम्मिलित होती है। सच बात यह है कि आज शिक्षकों को केवल कला शिक्षण के कौशल में ही प्रशिक्षित नहीं किया जाता अपितु उन्हें शिक्षा के मूल–आधारों दार्शनिक, समाजशास़्त्री, राजनैतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक और वैज्ञानिक का सामान्य ज्ञान भी कराया जाता है साथ ही अपने देश तथा राष्ट्रीय की शिक्षा–प्रणाली की गुण–दोषों से ही परिचित कराया जाता है और इस प्रकार उन्हें शिक्षा और शिक्षण के प्रति एक अर्न्तदृष्टि विकसित की जाती है जो उन्हें अच्छा बनने में सहायक होती है। हमारी दृष्टि से किसी भी स्तर और किसी भी प्रकार की शिक्षक शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित रूप से अभिव्यक्त किये जा सकते हैंः

1. शिक्षक को शिक्षा और शिक्षण के मूल आधारों का ज्ञान कराना एवं आकांक्षाओं का ज्ञान कराना और उनमें शिक्षा और शिक्षण के प्रति अर्न्तदृष्टि का विकास करना।
2. शिक्षकों को व्यक्ति समाज एवं राष्ट्रीय की आवश्यकताओं का ज्ञान कराना और उन सब की प्राप्ति के लिए तैयार कराना।
3. शिक्षकों को विभिन्न आयु वर्ग के छात्रों, विशेषकर उनके जिन्हें पढ़ाना आता है, उनकों मनोविज्ञान का ज्ञान कराना ओर उनके साथ तदनकूल व्यवहार करने की विधियों को प्रशिक्षित करना।
4. शिक्षकों को छात्रों की शिक्षा, उनकी स्वयं की, समाज की और राष्ट्रीय की भूमिका का ज्ञान कराना और इनके सहयोग से शिक्षा की प्रक्रिया बनाने में प्रशिक्षित करना।
5. शिक्षकों और विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विषयों एवं कराये जाने वाली क्रियाओं का स्पष्ट ज्ञान कराना और उन्हें उनके शिक्षण एवं संपादन की नई–नई प्रभावी विधियों एवं तकनीकी में प्रशिक्षित करना।
6. कक्षा नियंत्रण और विद्यालय संगठन की क्रियाओं में दक्ष बनाना।
7. शि़क्षकों में अपनी शैक्षिक समस्याओं को समझने एवं उन्हें हल करने की अर्न्तदृष्टि का विकास करना।

☯☯☯